पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

SEMESTER –II

CC-6

Unit-3 **TOPIC- -**

"STALIN"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क 9430934482

लेनिन के पश्चात स्टालिन सत्ता में आया जिसने अपनी नीतियों के द्वारा लेनिन के कार्यों को आगे बढ़ाया और रूस में पंचवर्षीय

योजनाओं को लागू कर रूस को एक शक्तिशाली देश बनाने में सफल रहा।

स्टालिन का जन्म 1879 ईस्वी में जॉर्जिया में एक मोची परिवार में हुआ था। उसको धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया परंतु उंसने बाईबल के स्थान पर कॉल मार्क्स के ग्रंथों का अध्ययन किया। अतः उसे स्कूल से निकाल दिया गया । कलांतर के वर्षों में

स्टालिन लेनिन के साथ हो गया और वह सामाजिक जनतांत्रिक दल (सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी) का सदस्य बन गया।उन्होंने लेनिन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना शुरू किया।सन् 1902 में क्रांतिकारी प्रदर्शन में भाग लेने के कारण उसे गिरफ्तार कर लिया गया और निर्वासित करके साइबेरिया भेज दिया गया पर वह वहां से भाग निकला। उसे 10 वर्षों में छह बार साइबेरिया भेजा गया पर वह 5 बार भाग गया। अतः 1913 में उसे उतरी सांइबेरिया में भेजा गया जहां उसे कठिन परिश्रम करना पड़ा और एकाकी जीवन भी उसे व्यतीत करना पड़ा। जब रूस में बोल्शेविक क्रांति हुई तो उसे वापस लौटने की आज्ञा दी गई। उसने वापस लौट कर पार्टी के प्रसार में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। पहले वह प्रथम कमिसार बाद में राष्ट्रीय जातियों का कमिसा र तथा अंत में महासचिव बन गया।

रूस के वि **1924 ईसवी में लेनिन कि मृत्यु के बाद साम्यवादी दल पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए स्टालिन और ट्राटस्की के बीच संघर्ष हुआ। लेनिन के समय ट्रा टस्की विदेश मंत्री था।यह विश्व क्रांति में विश्वास करता था। इसका मानना था कि तभी रूस में साम्यवाद सुरक्षित रह सकता है। जबकि स्टालिन इस सिद्धांत पर विश्वास करता था कि यूरोप में पूंजीवादी व्यवस्था मजबूती से स्थापित हो चुका है,अतः इसे समाप्त करना आसान नहीं होगा। इसलिए स्टालिन ने सबसे पहले रूस में साम्यवादी व्यवस्था को मजबूत बनाने का प्रयास किया।वह किसानो की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया। अंततः इसमें स्टालिन की जीत हुई। स्टालिन दल के महासचिव के पद पर आसीन था, अतः इसका दबदबा पार्टी पर अधिक था।इसने पार्टी के अन्य नेताओं के साथ मिलकर ट्राट स्की एवं उनके समर्थकों को पद से हटा दिया।इस प्रकार स्टालिन रूस का सर्वाधिक शक्तिशाली नेता बन गया।**

स्टालिन के कार्य:-

सत्ता में आने के बाद स्टालिन ने कहा कि किसान भूमि को पट्टे पर लेकर खेती का काम करे। इसके कारण किसान तीन वर्गों में विभक्त हो गए- 1- निर्धन, 2- मध्यम, 3- धनी किसान। स्टालिन ने वार्गभे द को समाप्त करने के लिए धनी किसान पर अधिक कर लगाया जबकि गरीब किसानो को कर से मुक्त रखा। परन्तु इससे वर्गभे द पूरा समाप्त नहीं हुआ । अतः धनी किसानों अर्थात कुलको का अंत करने के लिए सामूहिक खेती को बढ़ावा दिया गया।इसके लिए सरकार द्वारा ट्रक्टर,बीज तथा उर्वरक की इंतेज़ाम किया गया। इस तरह तीन प्रकार के सामूहिक खेती होने लगी।

1- सहकारी फार्म - इसमें बहुत किसान मिलकर खेती करते हैं।भूमि सम्मलित होती है,परन्तु उपकरन अपने अपने होते है।सभी किसान श्रम करते हैं तथा उपज श्रम के अनुसार विभाजित कर दी जाती हैं।

2-सम्मिलित फार्म - इस प्रकार की खेती में भूमि और उपकरण सब साथ होते हैं।परन्तु रहने के मकान एवं निजी वस्तु अपनी अपनी होती है।

3-कम्यून सिस्टम - इसमें सभी चीजें सम्मिलित होती हैं।खाना भी सभी एक ही साथ एक ही स्थान पर करते हैं।अगर किसी को किसी चीज की जरूरत है तो वह उसे सम्मिलित निधि से प्राप्त कर सकता था।इसी व्यवस्था को कम्यून कहते है। किसान कम्यून सिस्टम से अधिक निजी स्वामित्व को अधिक पसंद किया क्योंकि इसके अंतर्गत वे दूध, अंडा और अन्य कुछ सामानों के उत्पादन के लिए वे स्वतंत्र थे।इससे वे कुछ कमाई भी कर सकते थे।

स्टालिन ने इस प्रकार के कामों के द्वारा सामाजिक समाजिकरण की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम उठाया। कुछ किसानों ने जब इसका विरोध किया तो स्टालिन इस विरोध को दबा दिया। इसके साथ साथ स्टालिन ने रूस के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं को

लागू किया।इस उद्देश्य से उसने 1925 ईस्वी में योजना आयोग का गठन किया।उसने कास के लिए पंचवर्षीय योजना को लागू किए। Second world war(1939-1945) के पहले रूस में तीन पंचवर्षीय योजनाओं को लागू किया गया था।

स्टालिन ने रूसी प्रगति के लिए नियोजन की प्रक्रिया पर बल दिया और इसके तहत 1925 ई. में उसने योजना आयोग की स्थापना की और द्वितीय विश्वयुद्ध तक तीन पंचवर्षीय योजनाएं लागू की। प्रथम पंचवर्षीय योजना 1928 से 1932 ई. तक लागू रही जिसका उद्देश्य था, पूंजीवाद के अवशेषों का समाप्त करना, सोवियत रूस का औद्योगिकरण करना, कृषि का समूहीकरण एवं मशीनीकरण करना।
1932 ई. में दूसरी पंचवर्षीय योजना लागू हुई। इसमें उपभोत वस्तुओं के उत्पादन पर जोर दिया गया। फलतः रूसी जनता के रहन-सहन में सुधार होने लगा। साथ ही यातायात के साधनों और निवास स्थान के निर्माण की तरफ विशेष ध्यान दिया गया। चूंकि इसी समय जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ तथा उसने रूस पर आक्रमण की नीति अपनाई। अतः स्टालिन को उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण की बजाय अस्त्र-शस्त्र निर्माण पर ध्यान देना पड़ा। इस काल में रूस में लोहे-इस्पात तथा कोयले का उत्पादन कई गुना बढ़ गया। ट्रैक्टर, रेल इंजन के निर्माण में वह अग्रणी देश बना। यही वजह है कि नाजी आक्रमण के दौरान रूस ने उसका सफलतापूर्वक सामना किया। इसी तरह 1938 ई.में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो जाने के कारण इसे स्थागित करना पड़ा।

स्टालिन ने निरक्षरता को समाप्त करने पर बल दिया। उसने एक बार कहा था कि बौद्धिक क्रांति के बिना साम्यवादी आर्थिक व्यवस्था की सफलता संभव नहीं है। सरकार ने प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क तथा अनिवार्य कर दिया। रूसी भाषा के अलावे अन्य भाषा में भी पुस्तकों को प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान दिया गया। इन सबको सम्मिलित परिणाम यह हुआ कि 1941 ई. में रूस के 90 प्रतिशत लोग शिक्षित हो गए और रूस की वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में काफी प्रगति हुई।

1918 में लेनिन के काल में जिस संविधान का निर्माण हुआ था उसे स्टालिन ने 1936 ई. में संशोधित कर नए संविधान के रूप में लागू किया। इसके तहत इनकी संसद का नाम "सुप्रीम सोवियत ऑफ द यूएसएसाअर" रखा गया। इसमें दो सदन होते थे

जिनका कार्यकाल चार वर्ष निर्धारित था। 18 वर्षकी आयु वालों को मताधिकार दिया गया। नागरिको को काम पाने का अधिकार भी दिया गया।

इस प्रकार स्टालिन ने रूस को प्रगति के पथ पर अग्रसरित कर द्वितीय विश्वयुद्ध में नाजी जर्मनी का मुकाबला करने हेतु तैयार किया। यह बात ठीक है कि उसने जोर जुल्म, आतंक राज्य तथा तानाशाही के माध्यम से नीतियों को लागू किया। वह निर्दय होकर देश के भीतरी दुश्मनों के समक्ष पेश हुआ। लेकिन यह भी सत्य है कि यदि वह ऐसा नहीं करता तो विश्व की एक मात्र मजदूरों की सरकार नाजियों के हाथ नष्ट हो जाती।

साम्यवादी धर्म को जनता के लिए अफीम के समान समझते हैं । लेनिन तथा स्टालिन दोनों ने प्राचीन चर्च की सम्पत्ति को जब्त करने की नीति को अपनाया।यद्धपि सरकार ने चर्च में जाने को निषिद्ध नहीं किया लेकिन अधिकांश स्यामवादी दल के सदस्य चर्च नहीं जाते थे। अब रूस में धार्मिक उत्सवों के बजाय मई दिवस, क्रांति दिवस, लेनिन दिवस आदि अवसरों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

इस प्रकार स्टालिन ने यथार्थवादी नीतियों को अपनाते हुए न केवल रूस में स्यामवाद को मजबूत किया बल्कि रूस को भी एक शक्तिशाली देश के रूप में परिवर्तित कर दिया।

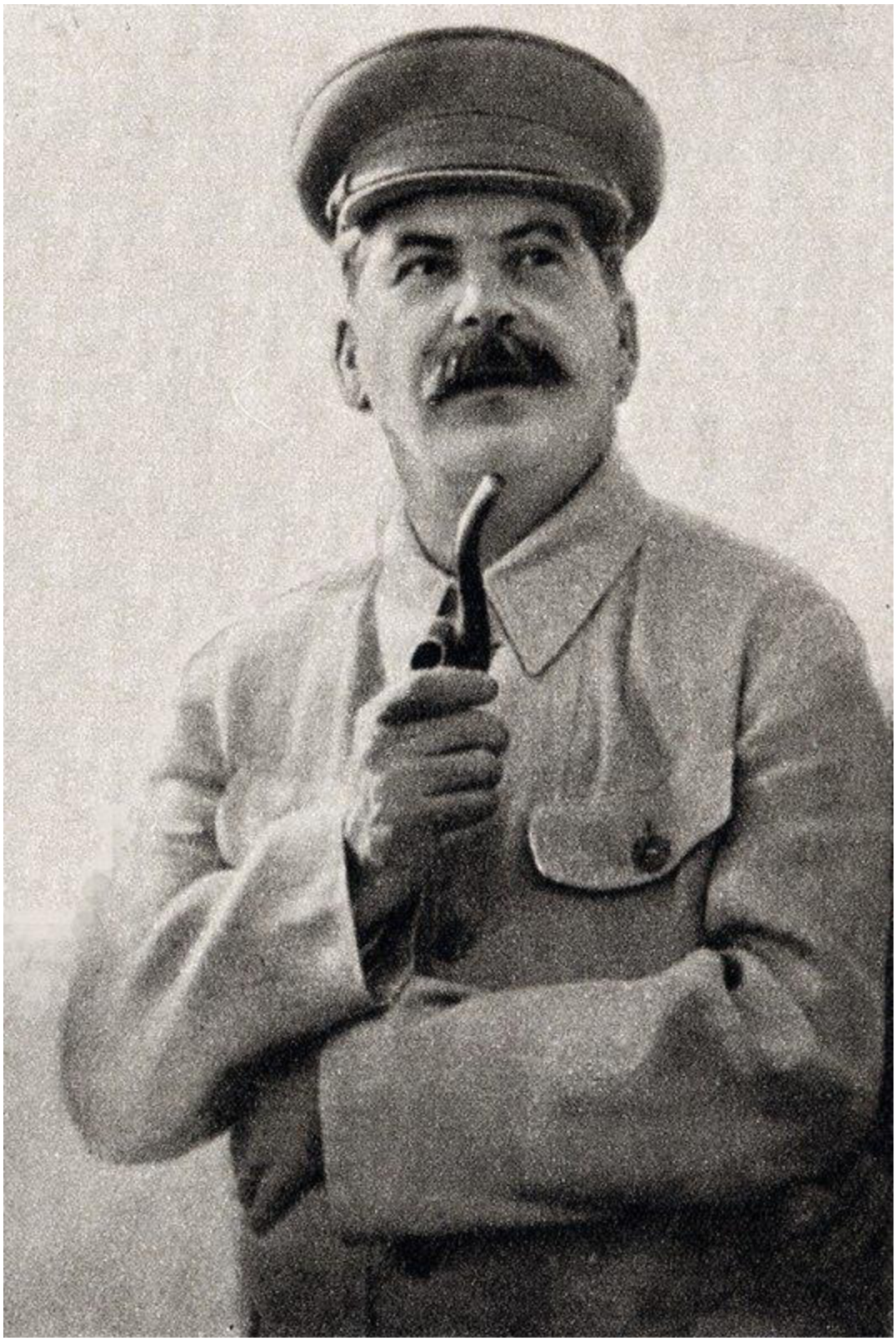

stalin